बी० ए० पार्ट–2 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अंशकालीन व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

गोपाल सिंह नेपाली का कवि परिचय

गोपाल सिंह 'नेपाली' छायावादोत्तर कवियों में विशिष्ट हैं। उनका जीवन और उनकी काव्य–साधना तद्युगीन परिस्थितियों से प्रभावित है। उन्होंने अपनी कविताओं के स्वर में ही अपने जीवन को भी ढाला है। नेपाली जी का जन्म बिहार के पश्चिम चम्पारण स्थित बेतिया में 11 अगस्त 1911 ई० को हवलदार मेजर श्री रेलबहादुर सिंह के घर हुआ। इनका वास्तविक नाम गोपाल बहादुर सिंह था। बाद में नेपाली उपनाम रखा। इनकी माता का नाम श्रीमती वीणारानी नेपाली था। वह नेपाल सरकार के गुरू पुरोहित पंडित विक्रमराज की सुपुत्री थीं, जिनका देहावसान नेपाली के बाल्यकाल में ही हो गया। पिता ने दूसरा विवाह 1923 ई० में कर लिया।

नेपाली जी का प्रारंभिक शिक्षा पेशावर अफगानिस्तान, देहरादून आदि सैनिक छावनियों में हुई। 1926 ई० में मिडिल स्कूल के छात्र रहे। 1932 ई० में बेतिया राज हाई स्कूल से प्रवेशिका तक शिक्षा प्राप्त की, लेकिन इन्हें मैट्रीक परीक्षा के लिए 'सेन्टअप' नहीं किया गया। पिता के सेना में रहने के कारण विभिन्न प्राकृतिक एवं मनोरम स्थानों का भ्रमण करने का अवसर मिला। किन्तु इन्हें पारिवारिक कलह एवं आर्थिक विपन्नता भी साथ–साथ झेलनी पड़ी।

गोपाल सिंह नेपाली उत्तर छायावाद के श्रेष्ठ कवियों में से हैं। सहजता, लोकप्रियता, मस्ती, फक्कड़पन एवं उत्सर्ग–भावना सर्वत्र व्याप्त है। उत्तर छायावादी काव्यधारा को बलवती बनाने में नेपाली के अतिरिक्त जिन रचनाकारों का नाम लिया जाता है, उनमें प्रमुख हैं–बच्चन, दिनकर, भगवती चरण वर्मा, आर० सी० प्रसाद सिंह, जानकीबल्लभ शास्त्री, अंचल इत्यादि। परन्तु दिनकर और नेपाली ऐसे कवि है, जिनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरमोत्कर्ष पर है। नेपाली की कविताओं में जीवन संघर्ष भी है और उसका समाधान भी। नेपाली अपने को 'वन मैन आर्मी' कहते थे और वस्तुतः वे थे भी

ऐसे ही। नेपाली का अपना दर्शन या, स्वतंत्र विचार या, अलग दृष्टिकोण था। उन्होंने कहा भी हैं– ' मैं हूँ अपना आप नमूना

मेरा अपना ढंग है।''

स्वतंत्र और स्वाधीन कलम के धनी ने कभी सत्ता की चाह नहीं की, न ही कभी अपना ईमान बेचा। इन्होंने लिखा– तुम सा लहरों में बह लेता

ते मैं भी सत्ता गह लेता

ईमान बेचता चलता तो

मैं भी महलों में रह लेता।

इनका कहना था 'मेरा धन है स्वाधीन कलम'। नेपाली का संपूर्ण काव्य व्यक्तित्व लोकचेतना तथा मानवतावादी भावना से ओत–प्रोत से सिंचित है।

नेपालीजी की राष्ट्रीय चेतना मात्र अतीत गौरव तथा सांस्कृतिक गरिमा की प्रशस्ति नहीं थी, बल्कि इनकी राष्ट्रीय चेतना निराला की चेतना की अग्रिम अभिव्यक्ति कही जाएगी। मातृभूमि के स्वाभाविक सौन्दर्य पर रीझना, स्वाधीनता के लिए संघर्ष करना एवं समतामूलक नवीन समाज की रचना का संकल्प कवि की राष्ट्रीय चेतना का वैशिष्ट्य है। इसके लिए कवि ने कभी भी समझौता नहीं किया है।

इनके कृतियों में उमंग (1934ई०), रागिनी (1935ई०), पंचमी (1942ई०), नवीन (1944ई०), नीलिमा (1944ई०) हिमालय ने पुकारा (1963ई०)

इन्होंने कई पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया–प्रभात (हस्तलिखित पत्रिका, बेतिया), सन् 1931 ई० से 'द मुरली' (अंग्रेजी पत्रिका) 1939 ई० तक, सुधा (लखनऊ) (निराला के साथ सं॰) चित्रपट–दिल्ली सिने पत्रिका, रतलाम टाइम्स (मध्यभारत) प्रधान संपादक के रूप में। योगी (पटना)

नेपीली जी ने सिनमा जगत में भी 1944 से 1956 ई० तक अपनी सेवा दी। जिनमें मुख्य रूप से 'नजराना'–1949–1950, 'सनसनी'–1950–1951, खुशबू–1954–1956, लगभग 45 फिल्मों में 300–400 गीतों की रचना की । सन् 1956 ई० से 1963 ई० तक स्वतंत्र लेखन एवंज न जागरण, घूम–घूमकर कविता पाठ कर लोंगों को जागृत करना।

गोपाल सिंह 'नेपाली' की कविताओं का मुख्य स्वर राष्ट्रीय चेतना का है। वे गाँधीवाद के प्रभाव को गहराई से महसूस करते है। सम्पूर्ण भारतवर्ष उस प्रभाव के नशे में दिखाई पड़ता है। मानो राष्ट्रीय आन्दोलन की लहर न होकर भांग का कोई नशा हो, जो हर उम्र के बच्चे बूढ़े को समान रूप से प्रभावित कर रहा हो, और सबके सब अपनी

अवस्था तथा स्थिति को भूलकर राष्ट्रमुक्ति के लिए कुर्बान हो जाना चाहते हैं। नेपाली की यह कविता तद्‌युगीन परिवेश में गाँधीवादी के प्रभाव को दर्शाती है।

नेपाली जी की काव्य–कला की प्रमुख विशेषता है उनका विशिष्ट भाषिक प्रयोग। विषयानुरूप शब्द–चयन और शब्द गुंफन की कला में वे सिद्धहस्त है। शब्द मैत्री के द्वारा ये शब्द–वृत्त या शब्द–गुच्छ की रचना करते है। इस तरह उनका विषय शब्दों के वृत में बँधकर साकार हो उठता है। उदाहरण के लिए–जब वे प्रेम का वर्णन करते है तो जवानी, राग, स्नेह, रूप, कोमल, मधुर आदि शब्दों को वृत्त बनाते हैं और जब क्रांति की बात करते हैं तो जंजीर, ज्वाला, चिनगारी, धुंध, कराल, दुःख, सीखचा आदि शब्दों का प्रयोग करते है। इस तरह के मित्र शब्द अर्थ की संगति और भाव की अनुगुंज पैदा करते है–

''रस पी–पीकर फूल उठा तन, फूटी कोंपल नरम–नरम

पहले–पहले जवानी आई तन के रोएं गरम–गरम

फूटा कंठ गुलाबी मुखरा, बदली बोली पहचानो।''

राष्ट्र का महान योद्धा 17 अप्रैल 1963 ई० को भागलपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नं॰2 पर अचानक हृदयगति रूक जाने के कारण , वे हम सब से दूर हो गए।